International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

प्रभु दयाल, शोधार्थी,
शिक्षा विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।

सारांश

विश्व में निवास करने वाले सभी प्राणियों में मनुष्य को ही सर्वश्रेष्ठ होने का दर्जा प्राप्त है। इसका मुख्य श्रेय शिक्षा को ही जाता है। जन्म के साथ सभी प्राणियों में पाश्विक प्रवृत्तियाँ पायी जाती हैं। शिक्षा ही मनुष्य को इन पाश्विक प्रवृत्तियों से निकालकर उच्च शिक्षित, नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों से ओत–प्रोत करती है। भारतीय परिवेश में किये गये अनेक अध्ययन मुस्लिम विद्यार्थियों की शैक्षिक समानता पर प्रकाश डालते हैं और इस तथ्य को प्रकाश में लाने का प्रयत्न करते हैं कि इस संबंध में किये गये प्रयास व संवैधानिक प्रावधान व्यावहारिक रूप में प्राावशाली हुए या नहीं। सैद्धान्तिक रूप में भी समुदाय के छात्र–छात्राओं को वांछित अवसर प्रदान करने का प्रावधान किया गया है। विभिन्न अवसरों की उपलब्धता ने शैक्षिक सुविधाओं में वृद्धि के साथ–साथ उनके पिछड़ेपन में कमी की है। साथ ही शैक्षिक सुविधाओं की उपलब्धता ने विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि के मार्ग को भी प्रशस्त किया है।शैक्षिक उपलब्धि बालक द्वारा अधिगमित एवं प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधन है। इस शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धिस्तर में समानतापायी गयी।

मुख्य शब्दः–शैक्षिक उपलब्धि, मुस्लिम समुदाय, माध्यमिक स्तर

प्रस्तावनाः–

जिस आधार स्तम्भ के सहारे मानव अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त करता है, वह शिक्षा ही होती है।अन्य रूपों में शिक्षा का एक कार्य मनुष्य को इस भौतिकतावादी संसार में स्वयं का अस्तित्त्व बनाये रखने का सामर्थ्य प्रदान करना भी है। अतः माध्यमिक शिक्षा के साथ शिक्षा के विभिन्न स्तरों के बदलते हुए स्वरूप और उपलब्धि को भली प्रकार स्वीकारा जाने लगा है।मनुष्य द्वारा जो उद्देश्य निर्धारित किये जाते हैं वो पूरे होंगे या नहीं, यह उसके द्वारा किये गये प्रयासों पर निर्भर करता है। मनुष्य जिस हद तक मनवांछितउद्देश्यों को पूरा करने में सफल हो जाता है उसे उपलब्धि कहा जाता है।

शिक्षण प्रक्रिया में रत विद्वजन विभिन्न स्तर के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण उद्देश्य निर्धारित करते हैं तथा इनकी प्राप्ति के लिए शिक्षण अधिगम क्रियाओं का आयोजन करते हैं। विद्यार्थी द्वारा जिस सीमा तक इन उद्देश्यों को प्राप्त कर लिया जाता है, वही उसकी शैक्षिक उपलब्धि कहलाती है। शैक्षिक उपलब्धि, बालक द्वारा अधिगमित एवं प्रयोग में लाये गये ज्ञान को मापने का सर्वोत्तम साधन है। शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर ही विभेदन द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि बालक किस श्रेणी में आता है; अर्थात् वह प्रतिभाशाली है, सामान्य है या पिछड़ा है।

सुपर के अनुसार :–

''शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है कि विद्यार्थी ने शिक्षण के उपरांत क्या और कितना सीखा, तथा वह कोई कार्य कितनी भली भाँति कर लेता है।''

माध्यमिक स्तर पर विद्यालयों में एक ही कक्षा में समान परिस्थितियों में कुछविद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि सामान्य, सामान्य से अधिक या सामान्य से कम होती है। माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियोंकी शैक्षिक उपलब्धि का मापन उनकी विशेषताओं, शिक्षण प्रक्रियाओं, शिक्षण संस्थाओं की व्यवस्थाओं को पहचानने के लिएऔर उनमें सुधार हेतु क्षेत्रों की पहचान करने में लाभदायीसिद्ध हो सकता है। इसी परिस्थितीय महत्त्व को ध्यान में रखते हुए इस समस्या का चयन अध्ययन हेतु किया गया।

शोध का उद्देश्य

माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

संबंधित साहित्य अध्ययन

प्रस्तुत शोधकार्य हेतु निर्मित परिकल्पनाओं का दत्त संकलन के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के अनुसार मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन किया गया। इसके परिणाम शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर पूर्व में हुए अलग–अलग शोधकार्यों के अनुक्रम में हैं, जहाँ झा, दिलीप कुमार (2019) ने ''माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के संबंध में कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन'' विषय पर शोध कार्य किया जिसके परिणाम दर्शाते हैं कि छात्रों केकक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं शैक्षिक उपलब्धि तथाकक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण एवं समायोजन में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।भदौरिया एवं शर्मा (2018) ने''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन'' नामकविषय पर शोध कार्य किया और पाया कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध मौजूद है।रानी, के.वी.(2017) ने ''रीजनिंग एबिलिटी एण्ड अकादमिक अचिवमेन्ट अमोंग सैकण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन त्रिवेन्द्रम'' विषय पर शोध किया और पाया कि माध्यमिक स्कूल के छात्रों में तर्क क्षमता और शैक्षिक उपलब्धि के बीच महत्त्वपूर्ण उच्च सकारात्मक सहसंबंध मौजूद हैं। राय, गीता (2014) द्वारा किये गये शोध अध्ययन के परिणाम उत्तराखण्ड राज्य के माध्यमिक और उच्च माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के आकांक्षां स्तर और अकादमिक प्रदर्शन पर उन विद्यार्थियों के अभिभावकों के प्रोत्साहन प्रभाव का धनात्मक संबंध प्रदर्शित करते हैं। पाण्डेय एवं पाण्डेय (2009) द्वारा किये गये शोध अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि विद्यार्थियों के समायोजन एवं शैक्षिक उपलब्धि के बीच परिमित धनात्मक सहसंबंध उपस्थित है तथा विद्यार्थियों में सामाजिक एवं आर्थिक भिन्नता के बावजूद जवाहर नवोदय विद्यालय, ज्ञानपुर, सभी विद्यार्थियों को एक समान शैक्षिक वातावरण उपलब्ध करवाता है जो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को समान रूप से प्रभावित करता है। प्रस्तुत शोधकार्य में माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया जो कि पूर्व में हुए शोध के परिणामों से पुष्ट होता है; जहाँ दास, अरिआनि एवं मिरदाद (2015) द्वारा किये गये शोध अध्ययन के परिणाम दर्शाते हैं कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए स्कूल डिज़ाइन एक महत्त्वपूर्ण कारक है तथा शारीरिक अधिगम क्षेत्र एवं निजी स्कूल डिज़ाइन वाली विशेषताएँ विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर मौलिक प्रभाव डालती हैं। कमात्ची (2014), पन्य (2014), अब्राहम (2014), दुग्गल (2014), लॉरेन्स (2014), यादव (2014), पिल्लै (2014), यादव (2013), सक्सेना एवं लक्ष्मी (2013), बत्रा (2011), शर्मा (2011), सैनी (2010), शैल (2003), इब्राहिम एवं मेहमेत (2014), चुआन एवं अन्य (2013), अकपोन्ग एवं जॉर्ज (2013), सावस्की एवं तोमूल (2013), अदनान एवं अन्य (2012), ट्रान एवं लेविस (2012), आफरी एवं स्वेखिन (2012) नें अपने अध्ययन शैक्षिक उपलब्धि तथा अन्य भिन्न चरों के साथ किये; किन्तु माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियोंकी शैक्षिक उपलब्धि आधारित कोई अध्ययन भारत या विदेशों में सम्पन्न अध्ययनों में प्राप्त नहीं हुआ। अतः शोधकर्त्ता द्वारा यह अध्ययन, माध्यमिक स्तर केमुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियोंकी शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया।

शोध परिकल्पना

- माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियोंकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधकार्य में सर्वेक्षण विधि प्रयुक्त की गई।

शोध उपकरण

शैक्षिक उपलब्धि मापनी (शैक्षिक उपलब्धि मापन हेतु छात्राओं की कक्षा 10 वीं में प्राप्त अंको को आधार बनाया गया।)

जनसंख्या

राजस्थान राज्य में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान से सम्बद्ध माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत मुस्लिम समुदाय के समस्त विद्यार्थी।

शोध न्यादर्श

शोधकर्त्ता द्वारा इस शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में शेखावाटी क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान से सम्बद्ध माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत कुल 400 मुस्लिम विद्यार्थियों को; 200 ग्रामीण, तथा 200 शहरी को, चुना गया जो कि विभिन्न विद्यालयों का प्रतिनिधित्त्व करते हैं।

शोध में प्रयुक्त चर

स्वतंत्र चरः–मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी

आश्रित चरः–शैक्षिक उपलब्धि

शोध में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा सम्भाव्य न्यादर्शन की साधारण यादृच्छिक विधि को प्रयुक्त किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है –

- मध्यमान
- मानक विचलन
- मानक त्रुटि
- स्वतंत्रता अंश
- आलोचनात्मक अनुपात

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परिकल्पना–1
माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।
सारणी संख्या – 1
(मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि, मध्यमानों का अन्तर, स्वतंत्रता के अंश तथा आलोचनात्मक अनुपात का प्रदर्शन)

मुस्लिम समुदाय	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	अन्तर की मानक त्रुटि SE_D	मध्यमानों का अन्तर D	स्वतंत्रता के अंश df	आलोचनात्मक अनुपात C.R.
ग्रामीण	200	52.54	11.77	1.28	1.66	398	1.29
शहरी	200	54.20	13.86				

व्याख्या एवं विश्लेषण –उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है किमाध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियोंकी शैक्षिक उपलब्धि के प्राप्तांकों के मध्यमान क्रमशः 52.54 व 54.20 हैं तथा दोनों समूहों के मानक विचलन क्रमशः 11.77 व 13.86 हैं। दोनों समूहों के मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि 1.28 है तथा मध्यमानों का अन्तर 1.66 है। दोनों समूहों के प्राप्तांकों का आलोचनात्मक अनुपात 1.29 है जो कि स्वतंत्रता के अंश 398 हेतु 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक मान 1.96 से कम है, अतः दोनों समूहों में मध्यमान का सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अतः **परिकल्पना – 1 को निरस्त नहीं किया जा सकता है।**

लेखाचित्र संख्या – 1
माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में अन्तर की सार्थकता का लेखाचित्रीय प्रदर्शन

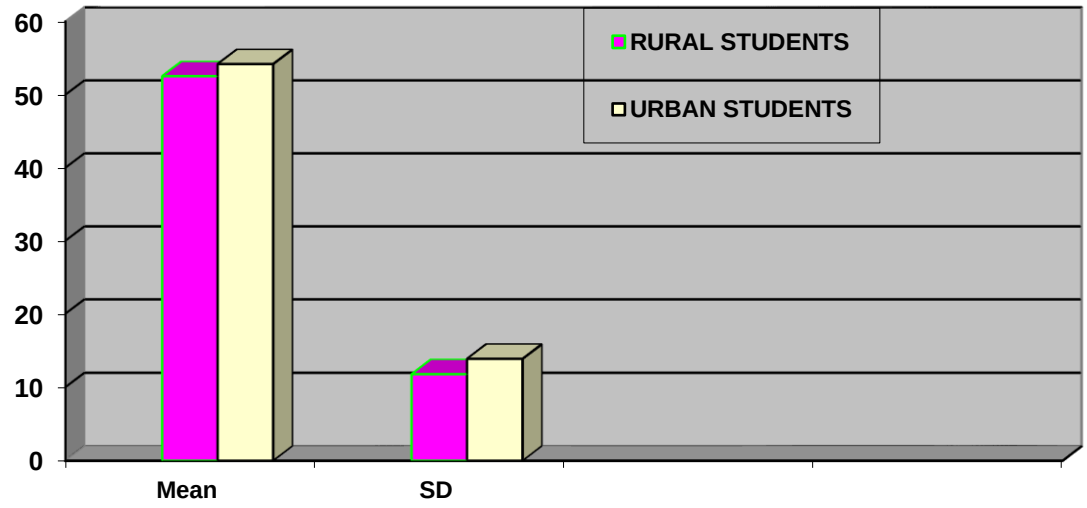

परिणाम –

दत्त विश्लेषणानुसार माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियोंकी शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। अर्थात् माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामिण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धिस्तर में समानता पायी गयी। हालांकि मुस्लिम समुदाय के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का मध्यमान (54.20) मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों केप्राप्तांकों के मध्यमान (52.54) से अधिक है, लेकिन दोनों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। जो भी अन्तर है, वह संयोगवश ही है। उक्त

अर्थापन इंगित करता है कि माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थी शैक्षिक उपलब्धि स्तर की दृष्टि से समान हैं, उनकी शैक्षिक उपलब्धि में कोई विशेष अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष –

- माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों कीशैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं है।

सुझाव –

- मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के अभिभावकोंको इन विद्यार्थियों के शैक्षिकपरिवेश के प्रति अधिक सजग किया जाना चाहिए।
- मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमताओं के साथ–साथ इनके ग्रामीण एवं शहरी वातावरणपर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- *गुप्ता एवं गुप्ता (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।*
- *गैरेट, एच.ई. (1981), मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी, दशम् संस्करण, बी.एफ. एण्ड सन्स, बॉम्बे।*
- *झा, दिलीप कुमार (2019),माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन के संबंध में कक्षा पर्यावरण प्रत्यक्षीकरण का अध्ययन, पीरिओडिक रिसर्च, 7(3), 97–103।*
- *ठाकुर, हरिनारायण (2009), भारत में पिछड़ा वर्ग आन्दोलन और परिवर्तन का नया समाजषास्त्र, कल्पाज़ पब्लिकेशन, नई दिल्ली।*
- *भदौरिया एवं शर्मा (2018), उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन, शोधयतन, 5(9), 136–144।*
- *शर्मा, सुरेन्द्र (2007), रिसर्च मैथडोलॉजी–शैक्षिक परिप्रेक्ष्य, नेहा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।*
- *हटन, जे.एच. (2002), भारत में जाति प्रथा (अनुवादित), श्री जैनेन्द्र प्रेस, दिल्ली।*
- *शर्मा, राजलक्ष्मी (2011), स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की आकांक्षा, आत्मविश्वास, सेवा अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, डॉक्टरल थीसिस, जैन विश्व भारती यूनिवर्सिटी, लाडनूँ।*
- *सैनी, मोनिका (2010),अ स्टडी ऑव अकादमिक अचिवमेन्ट ऑव सिड्यूल्ड कास्ट सैकण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स इन रिलेशन टू स्टडी हैबिट्स, होम एनवायरमेन्ट एण्ड स्कूल एनवायरमेन्ट, डॉक्टरल थीसिस, महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी, रोहतक।*
- *Abraham, Y. (2014), Emotional Intelligence, Self-esteem and Academic Achievement of Professional Course Students, EDUTRACKS, Vol. 14(2), pp 25-33.*
- *Lawrence, A.S.Arul. (2014), Relationship Between Study Habits and Academic Achievement of Higher Secondary School Students, Education, Vol. 4(6), pp 143-145.*
- *Pandey, Shriniwas & Pandey, Rajesh kumar. (2009), Jawahar Navoday Vidyalay me Kishorawastha ke samayojan evam Shaikshik Uplabdhi ka Adhyyan, Indian Journal of Teacher Education:Anwesika, Vol. 6(2), pp 133-141.*
- *Pany, Sesadeba. (2014), Academic Achievement of Secondary School Students having differential levels of Problem Solving Ability, MERI Journal of Education, Vol. 9(1), pp 77-82.*
- *Pillai, Anil Kumar MB. (2014), A Study of Learner Characteristics, School Environment, Achievement and Placement of Scheduled Caste Students of Madhya Pradesh,Indian Educational Review, Vol. 52(1), pp 59-80.*

References: Websites

- *www.eric.ed.gov*
- *www.scholar.google.com*
- *www.shodhganga.inflibnet.ac.in*

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9Issue 1, January 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

शोध पत्र का शीर्षक

माध्यमिक स्तर के मुस्लिम समुदाय के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

प्रभूदयाल
शोधार्थी, शिक्षा विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर।

निवास का पता –
प्रभु दयालपुत्र मोहन लाल
गाँव पोस्ट लाम्बा, वाया बगड़,
जिला झुन्झुनू, (राज.) पिन कोड –333023